VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

प्रेमचंद और फ्रांसीसी साहित्य
PREMCHAND AND FRENCH LITERATURE

https://doi.org/10.5281/zenodo.7393669

डॉ. श्रीनिकेत कुमार मिश्र /Dr. Sriniket Kumar Mishra
सहायक प्रोफ़ेसर /Assistant Professor
अनुवाद अध्ययन विभाग / Department of Translation Studies,
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, भारत
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha, India
ईमेल/Email : sriniket@yahoo.com
संपर्क सूत्र /Mobile No. : +91-8178789289

ABSTRACT

Premchand, one of the greatest short story writers in Hindi literature, had read *excessively world literature. He had translated many literary works into Hindi along with composing original literary works. We would focus our study specifically on his translations of* French *literary texts and reception of French literature in his writing. We would also come to know his idea about French literature. We would come to know about translation strategies of Premchand adopted in his literary translations. The objective of this article is to highlight* the effect and reception of French Literature in his writing.

Keywords: *Premchand, Translation,* Reception, *double translations, Fr*ench *literature in Hindi.*

शोधसार :

हिंदी साहित्य के महान कहानीकारों में प्रमुख प्रेमचंद ने विश्व साहित्य का गहन अध्ययन किया था। उन्होंने मूल साहित्यिक कृतियों के लेखन के साथ-साथ कई साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद भी किया था। हम अपने अध्ययन में विशेष रूप से फ्रांसीसी साहित्यिक ग्रंथों के अनुवादों और उनके लेखन में फ्रांसीसी साहित्य

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

के अभिग्रहण पर ध्यान केंद्रित करेंगे। हम इस आलेख से फ्रांसीसी साहित्य के बारे में उनके विचार से भी परिचित होंगे। हमें प्रेमचंद के साहित्यिक अनुवादों में अपनाई गई अनुवाद रणनीतियों के बारे में जानकारी मिल सकेगी। इस लेख का उद्देश्य प्रेमचंद के लेखन में फ्रांसीसी साहित्य के प्रभाव और उसके अभिग्रहण को रेखांकित करना है।

बीजशब्द : प्रेमचंद, अनुवाद, अभिग्रहण, सेतु भाषा अनुवाद, हिंदी में फ्रांसीसी साहित्य

प्रेमचंद भारत के प्रसिद्ध लेखकों और साहित्यकारों में से एक हैं। प्रेमचंद का असली नाम धनपत राय था। उनका जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के पास लमही नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था। प्रारंभ में उन्होंने उर्दू में साहित्यिक रचनाएँ कीं, लेकिन कुछ वर्षों के बाद उन्होंने हिंदी में लिखना शुरू किया। वे एक यथार्थवादी लेखक थे और वे मोपासौं के लेखन से बहुत प्रभावित थे। लेकिन, वे यथार्थवादी होने के साथ-साथ आदर्शोन्मुख भी थे। वे अपनी रचनाओं में यथार्थ और आदर्श का मिश्रण करना चाहते थे। उनके प्रसिद्ध निबंध *कहानी कला-1* से हमें पता चलता है कि वे यथार्थवाद के बारे में क्या सोचते थे :

"हमें भी आदर्श ही की मर्यादा का पालन करना चाहिए। हाँ, यथार्थ का उसमें ऐसा सम्मिश्रण होना चाहिए कि सत्य से दूर न जाना पड़े।") प्रेमचंद, 2008 : 30(

उनके अनुसार आदर्श की नैतिकता का हमें सम्मान करना चाहिए। वे कहते हैं कि वास्तविकता का ऐसा संलयन या सम्मिश्रण होना चाहिए कि लेखन या रचना यथार्थ से दूर नहीं जान पड़े। उन्होंने अपने निबंध *कहानी कला-2* में भी कहा है :

"कला दीखती तो यथार्थ है, पर यथार्थ होती नहीं।") प्रेमचंद, 2008 : 3(

उपर्युक्त कथनों के माध्यम से हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद कला में यथार्थवाद और आदर्शवाद के मिश्रण के हिमायती थे। उनकी रचनाओं में इस संलयन को देखा जा सकता है। प्रेमचंद ने अपने लेखन में सरल, स्पष्ट और रोचक भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने अपने कार्यों में ग्रामीण किसान वर्ग की समस्याओं का विशेष रूप से वर्णन किया है।

प्रेमचंद ने लगभग 250 कहानियाँ और कई उपन्यासों की रचना की। उन्होंने संग्राम (1923), कर्बला (1924) और प्रेम की वेदी (1933) जैसे नाटक भी लिखे। उन्होंने विभिन्न

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

विषयों पर कई निबंध भी लिखे हैं। वे विश्व साहित्य से अच्छी तरह परिचित थे और अंग्रेजी के साथ-साथ रूसी एवं फ्रांसीसी साहित्य के भी गंभीर अध्येता थे। वे आधुनिक कहानी विधा के विकास में फ्रांसीसी और रूसी लेखकों के योगदान को स्वीकार करते हैं। उन्होंने अपने निबंध *कहानी कला-2* में उल्लेख किया है कि आधुनिक कहानी के विकास में बाल्ज़ाक, मोपासौं, चेखव, टॉल्स्टॉय, मैक्सिम गोर्की आदि अनेक यूरोपीय लेखकों का विशेष योगदान है :

"कहानी को विकसित करने में यूरोप के महान कलाकार बालजक ,मोपासां ,चेखव, टॉलस्टॉय, मैक्सिम गोर्की आदि मुख्य हैं ।")प्रेमचंद, 2008 : 35(

उन्होंने बहुत सारे विदेशी साहित्य पढ़े थे। उन्होंने चेखव, टॉल्स्टॉय, मैक्सिम गोर्की, ह्यूगो, अनातोल फ्रौंस और मातेरलैंक का अध्ययन किया था)प्रेमचंद, 2008 : 35(। आधुनिक कहानी के शिल्प पर अपने निबंध *कहानी कला -3* में प्रेमचंद ने कहा है कि उन्होंने फ्रांस और रूस तक अपने ज्ञान को कैसे विस्तारित-विकसित और समृद्ध किया। उनका कहना है कि फ्रांस और रूस के साथ उनके संबंध मोपासौं, अनातोल फ्रौंस, चेखव और टॉल्स्टॉय की कहानियों के माध्यम से स्थापित हुए।

" ...मोपासाँ ,अनातोले फ्रांस ,चेकाफ़ और टालस्टाय की कहानियाँ पढ़कर हमने फ्रांस और रूस से आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया है। हमारे परिचय का क्षेत्र सागरों और द्वीपों और पहाड़ों को लाँघता हुआ फ्रांस और रूस तक विस्तृत हो गया है।") प्रेमचंद, 2008 : 44(

अपने निबंध *कहानी कला-1* में उन्होंने कहानी लेखन की विधा में फ्रांस और रूस के साहित्य की श्रेष्ठता का वर्णन किया है। उनके अनुसार, कहानी कहने की शैली यूरोप की सभी भाषाओं में बहुत लोकप्रिय है, लेकिन फ्रांस और रूस की कहानियाँ गुणवत्ता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हैं। उन्होंने अन्य यूरोपीय भाषाओं में कहानियों का ऐसा शिल्प नहीं देखा है :

"योरप की सभी भाषाओं में गल्पों का यथेष्ट प्रचार है; पर मेरे विचार में फ्रांस और रूस के साहित्य में जितनी उच्च-कोटि की गल्पें पाई जाती हैं ,उतनी अन्य योरपीय भाषाओं में नहीं ।")प्रेमचंद, 2008 : 27(

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

इस प्रकार, प्रेमचंद रुसी के साथ-साथ फ्रांसीसी साहित्य को बहुत पसंद करते थे। प्रेमचंद एक महान लेखक होने के साथ ही एक उम्दा-बेहतरीन अनुवादक भी थे। उन्होंने कई साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया है। उन्होंने अपने निबंधों में रूस और फ्रांस के साहित्य की बहुत सराहना की है। उन्होंने रूसी और फ्रांसीसी साहित्य से कई उदाहरणों का उल्लेख किया है। शायद इसीलिए उन्होंने इन दोनों भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद करने का फैसला किया हो। उन्होंने कुछ अंग्रेजी की भी रचनाओं यथा जॉन गाल्सवर्दी की *जस्टिस* (*Justice*), द सिल्वर बॉक्स (*The Silver box*) एवं *स्ट्राइफ़* (*Strife*) का भी अनुवाद किया है क्योंकि उन्हें गाल्सवर्दी की रचनाएँ पसंद थीं। उन्होंने इन्हें क्रमशः *न्याय, चांदी की डिबिया* एवं *हड़ताल* के शीर्षक से हिंदी में अनुवाद किया है। 1930 में हिन्दुस्तानी अकादेमी इलाहाबाद ने इन अनुवादों को प्रकाशित किया। बाद में 'सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद' ने गाल्सवर्दी के तीन नाटकों के इन अनुवादों का एक संग्रह तैयार किया जो 1974 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने 1920 में जॉर्ज एलिअट की *सिलास मार्नर* (*Silas Marner*) को *सुखदास*, 1923 में टॉल्स्टॉय की कहानियों को *टॉलस्टाय की कहानियाँ* और जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की *बैक टू मेतुसेलाह* (*Back to Methuselah*) को *सृष्टि का आरंभ* के नाम से अनुवाद किया। उन्होंने देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूजी के पत्रों, *लेटर्स फ्रॉम अ फ़ादर टू हिज डॉटर* (*Letters from a Father to His Daughter,*) को *पिता के* पत्र पुत्री के नाम शीर्षक से अनुवाद किया है। उन्होंने पंडित रतन नाथ धर शरसार की रचना *फसाना-ए-आज़ाद* को उर्दू से हिंदी में *आज़ादकथा* के नाम से तर्जुमा भी किया है। यह हिंदी तर्जुमा पहली बार 1925 में गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया था। (हुसैन एवं अन्य, खंड-1 2006: 74-75)

मुंशी प्रेमचंद ने फ्रैंकोफोन की दुनिया की कई साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया है। उन्होंने मातेरलैंक और अनातोल फ्रौंस के कार्यों के लिए अपने लेखन में "फ्रांसीसी साहित्य" शब्द का इस्तेमाल किया। मुंशी प्रेमचंद फ्रांसीसी साहित्य को अच्छी तरह जानते थे। *कहानी कला -1* नामक अपने निबंध में, मुंशी प्रेमचंद ने अंग्रेजी साहित्य की तुलना में फ्रांसीसी साहित्य को श्रेष्ठ घोषित करते हैं। वे कहते हैं :

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

"अँगरेजी में भी डिकेंस, वेल्स, हार्डी, किप्लिंग ,शार्लट यंग, ब्रांटी आदि ने कहानियाँ लिखी हैं, लेकिन इनकी रचनाएँ गाई-डी० मोपासाँ ,बालज़क या पियेर-लोटी के टक्कर की नहीं। फ्रांसीसी कहानियों में सरसता की मात्रा बहुत अधिक रहती है। इसके अतिरिक्त मोपासाँ और बालज़क ने आख्यायिका के आदर्श को हाथ से नहीं जाने दिया है।") प्रेमचंद, 2008 : 27-28(

प्रेमचंद के अनुसार, चार्ल्स डिकेंस, हर्बर्ट जॉर्ज वेल्स, थॉमस हार्डी, रुडयार्ड किपलिंग, शार्लोत मैरी योंग, एमिली ब्रोंटे और अन्य अंग्रेजी लेखकों ने कहानियाँ लिखीं, लेकिन ये कहानियाँ गी द मोपासौं, बाल्ज़ाक या पियेर लोती की कहानियों से बेहतर नहीं हैं। फ्रांसीसी कहानियाँ अधिक सुरम्य और स्पष्ट हैं। इसके अलावा, मोपासौं और बाल्ज़ाक ने कथा साहित्य की आत्मा को बरकरार रखा। इसलिए, प्रेमचंद फ्रांसीसी साहित्य को अंग्रेजी साहित्य से बेहतर मानते थे। *अहंकार* की प्रस्तावना में प्रेमचंद ने घोषित किया है कि फ्रांस का साहित्य यूरोप का सर्वश्रेष्ठ साहित्य है :

"यूरोप में फ्रांस का सरस साहित्य सर्वोत्तम है।")प्रेमचंद, 1988 : 05(

प्रेमचंद की कहानी *शतरंज के खिलाड़ी* पर फ्रांसीसी लेखक आल्फोंस दोदे की एक कहानी *पार्टी द बियाह* (*Partie de Billiards*) की छाया दिखती है। (मिश्र, 2017) दोनों कहानियों में बहुत कुछ साम्य है; एक में *बिलियर्ड्स की बाजी* है तो दूसरे में *शतरंज के खिलाड़ी*। धातव्य है कि उर्दू में यही *कहानी शतरंज की बाजी* नाम से प्रकाशित हुई थी। (राय एवं अली, 2002) यह भिन्न अध्ययन की वास्तु की है कि यह प्रभाव कितना और कैसा है, किंतु *शतरंज के खिलाड़ी* या *शतरंज की बाजी* मूल फ्रांसीसी कहानी से कहानी सृजन एवं शिल्प में मीलों आगे है। प्रेमचंद कलम के जादूगर थे और इन्होंने इस कहानी के माध्यम से भारतीय परिवेश को बखूबी चित्रित किया है।

यह ध्यान देने की बात है कि प्रेमचंद ने अपने लेखन में फ्रांसीसी साहित्य की सराहना बार-बार की तथा इसे अंग्रेजी साहित्य से बेहतर भी बताया है। इस प्रकार, प्रेमचंद का फ्रांसीसी साहित्य के प्रति विशेष अनुराग था। फ्रांसीसी साहित्य के प्रति इस लगाव का कारण यह भी हो सकता है कि अंग्रेजी उस समय औपनिवेशिक शक्ति की भाषा थी तथा भारत उनके समय में

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

ब्रिटिश शासन के अधीन था। प्रेमचंद पर फ्रांसीसी कथा साहित्य के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता।

प्रेमचंद ने तीन फ्रांसीसी साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया है। उन्होंने अनातोल फ्रौंस की *तायस* (*Thaïs*), एवं मौरिस मातेरलैंक की *ले जावोग्ल* (*Les aveugles*) और *पलेआस ए मेलिजौंद* (*Pelléas et Mélisande*) का हिंदी में अनुवाद किया है। *तायस* (*Thaïs*) को *अहंकार, ले जावोग्ल* (*Les aveugles*) को *शबे तार यानी अँधेरी रात* के शीर्षक से हिंदी में अनुवाद किया गया है। हमें उक्त दो अनुवाद आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं लेकिन *पलेआस ए मेलिजौंद* (*Pelléas et Mélisande*) का हिंदी अनुवाद अभी तक अप्राप्त है। अमृत राय, प्रख्यात लेखक और प्रेमचंद के पुत्र, इस संबंध में कहते हैं कि इसके अनुवाद का जिक्र तो मिलता है, लेकिन अनुवाद की पांडुलिपि या प्रकाशित प्रति अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी है। (मिश्र, 2017: 26)

इस अध्ययन के लिए हमने *ले जावोग्ल* (*Les aveugles*) और *तायस* (*Thaïs*) का चुनाव किया है। मुंशी प्रेमचंद द्वारा हिंदी में अनूदित ये दो फ्रांसीसी साहित्यिक कृतियाँ हैं। हम इन दो कृतियों के माध्यम से अनुवाद-कर्म को सीख सकते हैं। हम इनकी सहायता से साहित्यिक अनुवाद पर प्रेमचंद के विचारों से परिचित हो सकते हैं।

ले जावोग्ल (*Les aveugles*) प्रसिद्ध बेल्जियन लेखक मौरिस मातेरलैंक द्वारा रचित एक अंक वाला नाटक या एकांकी है जो 1890 में लिखा गया था। इसे अंग्रेजी भाषा में दो शीर्षकों से अनुवाद किया गया है : *द साईटलेस (The Sightless)* और *द ब्लाइंड (The Blind)*। हमने इस अध्ययन के लिए उपर्युक्त दोनों अनुवादों का अध्ययन किया है और इन दोनों अनुवादों के बीच के अंतर को आसानी से देखा जा सकता है। अमृत राय ने इस अनूदित कृति '*शबे तार यानी अँधेरी रात*' की प्रस्तावना में स्पष्ट रूप से लिखा है कि यह कृति मौरिस मातेरलैंक की *द साईटलेस (The Sightless)* का अनुवाद है तथा इसी प्रस्तावना में वे बताते हैं कि *पलेआस ए मेलिजौंद* (*Pelléas et Mélisande*) का भी अनुवाद प्रेमचंद जी ने किया था।

ले जावोग्ल का अनुवाद पहली बार 1919 में उर्दू साहित्यिक पत्रिका 'ज़माना' में '*शबे तार*' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। प्रेमचंद ने लारेंस तदेमा अल्मा के अनुवाद 'द साइटलेस' से

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

उर्दू में अनुवाद किया। हिंदी अनुवाद उर्दू का लिप्यंतरण है। यहाँ तक कि कोई भी यह आसानी से समझ सकता है कि उर्दू में 'शबे तार' शीर्षक का भी हिंदी में लिप्यंतरण किया गया है और इसका अनुवाद 'अँधेरी रात' भी शीर्षक में जोड़ दिया गया है और इस प्रकार मरणोपरांत इस कृति का हिंदी में ‘*शबे तार यानी अँधेरी रात*’ शीर्षक के रूप में प्रकाशन हुआ।

प्रेमचंद को मौरिस मातेरलैंक का लेखन बहुत पसंद था। मातेरलैंक दुनिया के जाने-माने लेखक थे और उन्हें 1911 में ही नोबेल पुरस्कार से भी नवाजा गया था। 'उपन्यास' नामक निबंध में, प्रेमचंद ने मातेरलैंक को बेल्जियम के शेक्सपियर के रूप में वर्णित किया है। उनका मानना था कि मातेरलैंक विश्व प्रसिद्ध नाटककार हैं :

“ ‘मेटरलिंक ’बेलजियम के जगद्विख्यात नाटककार हैं। उन्हें बेलजियन शेक्सपियर कहते हैं। ”) प्रेमचंद, 2008 : 54(

सबसे पहले, हम अनुवाद का शीर्षक देखते हैं। हम 'शबे तार' से समझ में आता है कि यह शीर्षक फ्रांसीसी शीर्षक का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। उर्दू शब्द का अर्थ है- अंधेरी रात । फ्रांसीसी भाषा के शीर्षक *ले जावोग्ल* (*Les aveugles*) का शब्दानुवाद 'अंधे' होता और अंग्रेजी के *द साईटलेस (The Sightless)* का अनुवाद ‘दृष्टिहीन’ होता लेकिन प्रेमचंद ने इन शब्दों का शीर्षक के अनुवाद के लिए चयन नहीं किया है । प्रेमचंद शायद शीर्षक हेतु 'अंधे' या ‘दृष्टिहीन’ जैसे नकारात्मक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहते होंगे। इस अनुवाद में प्रयुक्त शब्दों को समझने के लिए हम कई ‘पाद-टिप्पणियाँ’ या 'फुटनोट' देख सकते हैं। हम इस अनुवाद को पृष्ठ के नीचे दी गई शब्दावली के बिना नहीं समझ सकते हैं। हमें इस अनुवाद में पात्रों का विवरण नहीं दिखता है।

मूल नाटक में ईसाइयत से जुड़े हुए कई शब्द दिखते हैं लेकिन अनूदित नाटक में इन्हें इस्लाम से संबंधित शब्द, यथा नमाज़ ,इबादतखाने ,वस्सलाम आदि के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। किंतु, दूसरी तरफ उन्हीं पात्रों के लिए प्रेमचंद ने साधुजी ,बैरागियों आदि शब्दों का चयन किया है। हमें यहाँ यह समझ में नहीं आता कि प्रेमचंद ने क्यों इस्लाम एवं हिंदू धर्म से संबंधित विपरीत शब्दावली का प्रयोग किया है। कोई अन्य अनुवादक होता तो वह ‘साधुजी’ की जगह पर ‘मौलाना’, ‘बैरागियों’ के लिए ‘फ़क़ीर’ शब्द इस्तेमाल करता। यह रचना लारेंस

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

तदेमा अल्मा के अनुवाद के बहुत करीब है, लेकिन प्रेमचंद ने कहीं-कहीं अपनी प्रतिभा और विवेक का इस्तेमाल किया और साहित्यिक सृजन की स्वतंत्रता के साथ अनुवाद किया।

अनातोल फ्रौंस का *तायस* (*Thaïs*) उपन्यास पहली बार सन 1889 में पत्रिका '*रव्यु दे दो मोंद*' (Revue des deux Mondes) के जुलाई और अगस्त के अंक में प्रकाशित हुआ था। अनातोल फ्रौंस को 1921 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। प्रेमचंद विश्वकोश-1 के अनुसार *तायस* का अनुवाद पहली बार ओक्टूबर में प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद का पहला संस्करण कलकत्ता पुस्तक भंडार, कलकत्ता द्वारा शुरू किया गया था और सरस्वती प्रेस, वाराणसी द्वारा मुद्रित किया गया था। इस अनुवाद की समीक्षा मासिक पत्रिका सरस्वती में नवंबर 1923 में प्रकाशित हुई थी। (प्रेमचंद रचनावली-1, 2006: 72).

मुंशी प्रेमचंद ने *तायस (Thaïs)* का हिंदी में *अहंकार* नाम से अनुवाद किया है। यह अनुवाद रचनात्मकता की स्वतंत्रता से युक्त एक मुक्तानुवाद है। प्रेमचंद ने स्वयं इस अनुवाद के लिए अपनी रणनीति इस पुस्तक की प्रस्तावना में लिखी है। इस प्रस्तावना में प्रेमचंद ने फ्रांस के साहित्य और लेखक अनातोल फ्रौंस और उनकी कृति *तायस* का परिचय भी दिया है। उन्होंने अनातोल फ्रौंस की भाषा के बारे में भी बताया। उन्होंने लिखा है कि उन्होंने इस कृति के अनुवाद कार्य को क्यों चुना। उनका कहना है कि उन्होंने अंग्रेजी में इतना सुंदर साहित्य नहीं देखा है :

" हमने इसका अनुवाद केवल इसलिए किया है कि हमें यह पुस्तक सर्वांगसुंदर प्रतीत हुई और हमें यह कहने में संकोच नहीं है कि इससे सुंदर साहित्य हमने अंग्रेजी में नहीं देखा। " (प्रेमचंद : 1998)

उन्होंने ' *तायस*' शीर्षक को पूरी तरह से बदल दिया है और अनुवाद के लिए 'अहंकार' शब्द का चयन किया है। उन्होंने इस पाठ की केंद्रीय भावना पर बल दिया है। मूल कृति में, उपन्यास का नाम केंद्रीय चरित्र 'तायस' के नाम पर रखा गया था, लेकिन प्रेमचंद शायद 'अहंकार' शीर्षक से अच्छा होने या कुछ कीमती होने की घमंड की भावना को प्रदर्शित करना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने हिंदी में फ्रांसीसी शीर्षक से मूल शीर्षक के अर्थ और सार को विस्तारित करने का कार्य किया।

उन्होंने अपने अनुवाद में स्थानों और घटनाओं के नाम बदल दिए या छोड़ दिए। हो सकता है कि वे उन नामों का वर्णन करने के लिए पाद टिप्पणी या फुटनोट नहीं देना चाहते हों। उन्होंने कुछ घटनाओं का भी जिक्र नहीं किया है। उन्होंने मूल उपन्यास के चरित्रों के नाम भी बदल दिए हैं। उन्होंने 'पापन्युस' को 'पापनाशी' कर दिया है। उन्होंने इस पाठ का अंग्रेजी से अनुवाद किया है इसलिए उनके सामने 'पाफन्युशियस' था। उन्होंने स्वयं उल्लेख किया कि नामों के उच्चारण को सरल बनाने के लिए, मैंने नामों को थोड़ा संशोधित कर दिया है :

" 'पापनाशी 'मूल में' पापन्युशियस था। सरलता के विचार से थोड़ा रूपांतर कर दिया। "

वह संभवतः पात्रों के नामों का भारतीयकरण करना नहीं चाहते थे या ईसाई नामों को हिंदू नामों में तब्दील करना नहीं चाहते थे। इसलिए, उन्होंने नामों को 'थायस' ,'पालम') Palémon(, 'फलदा', 'निसियास', 'सेरापियम' आदि से अनुवाद किया (प्रेमचंद, 1988: 10) । उन्होंने भारत के अनुसार स्थानों या संस्कृतियों को रूपांतरित नहीं किया और मूल कार्य में मौजूद परिवेश या वातावरण को यथा संभव बनाए रखा। इसलिए, इस अनुवाद को रूपांतरण नहीं माना जा सकता जिस प्रकार 'प्रेमचंद रचनावली भाग-1 में लिखा गया है। (हुसैन एवं अन्य, 2006 : 74).

हालाँकि प्रेमचंद ने अनुवादों पर अपनी टिप्पणियों में स्रोत पाठ के विवरण का कहीं भी उल्लेख नहीं किया है, लेकिन हमें उनके लेखन में फ्रांसीसी लेखकों के नाम यथा- 'गाई-डी' और 'पियरे लोटी' देखने को मिलते हैं। हम जानते हैं कि फ्रेंच में 'ड' /ḍ, ḏ/ और 'ट' /ṭ/ जैसी ध्वनियाँ मौजूद नहीं हैं। हम ऐसा मान सकते हैं कि उन्होंने फ्रांसीसी भाषा नहीं सीखी थी इसलिए उन्होंने इन कृतियों को अंग्रेजी में पढ़ा होगा। अंत: उनके फ्रांसीसी साहित्यिक कृतियों के अनुवाद फ्रांसीसी भाषा से प्रत्यक्ष न होकर अंग्रेजी के माध्यम से किया गया अनुवाद है। यहाँ अंग्रेजी फ्रांसीसी और हिंदी के मध्य सेतु भाषा के रूप में कार्य कर रही है तथा प्रेमचंद द्वारा अनूदित फ्रांसीसी साहित्य का अनुवाद परोक्ष अनुवाद या सेतु भाषा अनुवाद की श्रेणी में रखा जा सकता है।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

प्रेमचंद ने फ्रांसीसी साहित्यिक कृतियों का अनुवाद करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने अंग्रेजी भाषा के माध्यम से इन रचनाओं का अनुवाद किया। वे एक प्रख्यात सम्मानित लेखक हैं और रचनात्मक और साहित्यिक स्वतंत्रता से परिपूर्ण एक अच्छे अनुवादक भी हैं। इन साहित्यिक अनुवादों में उन्होंने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का बखूबी प्रदर्शन किया है। उन्होंने अनुवाद के लिए उन्हीं फ्रांसीसी लेखकों को चुना जिन्हें पहले ही नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका था। अनुवादक की तकनीकों और रणनीतियों और लेखक की असाधारण प्रतिभा को उसने साहित्यिक अनुवादों में देखा जा सकता है। साहित्यिक अनुवाद पर प्रेमचंद से अलग राय हो सकती है, लेकिन इन अनुवादों से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। फ्रांसीसी साहित्यिक कार्यों के उनके अनुवादों से हमें फ्रांसीसी साहित्य के बारे में पता चला है और उनके विभिन्न लेखों में फ्रांस एवं फ्रांसीसी साहित्य का बार-बार उल्लेख मिलने से हमें फ्रांसीसी साहित्य में और विशेष रूप से अनुवाद के शिल्प में रुचि विकसित करने की प्रेरणा मिलती है। प्रेमचंद के फ्रांसीसी साहित्य एवं लेखकों संबंधी विचार, उनकी कहानी पर फ्रांसीसी कहानी की छाया और उनके द्वारा फ्रांसीसी साहित्यिक रचनाओं के हिंदी में अनुवाद को देखकर उन पर फ्रांसीसी साहित्य के प्रभाव को स्वीकार किया जा सकता है।

REFERENCES

1. Douglas, Robert B. (trans.) (1922). *Thais*. New York : Dodd, Mead & Company.
2. France, Anatole. (1920). Thaïs. Paris : Calmann-Lévy.
3. George, W.L. (1915). *Anatole France*. London : Nisbet & Co. Ltd.
4. Maeterlinck, Maurice. (1892). Les aveugles (3e édition). Bruxelles: Paul Lacomblez.
5. Mishra, Sriniket Kumar. (2017). 'La partie de Billard et Shatranj ke Khiladi : le parallélisme dans la représentation de deux évènements historiques' in *Research Highlights*, Volume – IV, No. – 3, July – Sept. 2017, Varanasi : Future Fact Society.
6. Tadema Alma, Laurence. (trans.) (1895). *Pelleas And Melisanda And The Sightless* (les deux pièces de Maurice Maeterlinck). Londre: Walter Scott.

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

7. गोयनका, कमल किशोर (सं.). (1981). *प्रेमचंद विश्वकोश.* दिल्ली : प्रभात प्रकाशन.

8. प्रेमचंद. (2008). *कुछ विचार.* इलाहाबाद : लोकभारती.

9. प्रेमचंद. (अनु.) (1998). *अहंकार.* (अनातोल फ्रौंस का 'तायस' का हिंदी अनुवाद) नई दिल्ली : एस.के. पब्लिशर्स.

10. प्रेमचंद. (अनु.) (पुस्तक में प्रकाशन वर्ष का उल्लेख नहीं है). *शबे तार यानी अँधेरी रात* (मौरिस मातेरलैंक की *द साईटलेस का हिंदी अनुवाद*) इलाहाबाद : हंस प्रकाशन.

11. राय, आलोक एवं अली, मुश्ताक़. (सं.) (2002). *समक्ष : प्रेमचंद की बीस उर्दू-हिंदी कहानियों का समांतर पाठ.* इलाहाबाद : हंस प्रकाशन.

12. हुसैन, प्रो. ज़बीर एवं अन्य. (सं.) (2006). *प्रेमचंद रचनावली (खंड 1-20).* नई दिल्ली : जनवाणी प्रकाशन.